सेमेस्टर परीक्षा–2021

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्नपत्र कोड: BHL-E-511

अवधि: 3 घंटा **अधिकतम अंक: 70**

न्यूनतम अंक: 40%

नोट: प्रश्नपत्र के दो भाग हैं ए एवं बी। निर्देशानुसार दोनों भाग कीजिये

सेक्शन-ए: लघु उत्तरीय प्रश्न

निर्देश: किन्ही पांच प्रश्नो के प्रति प्रश्न लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये. प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

(5 X 6 = 30 अंक)

प्रश्न संख्या-1सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के जीवन पर प्रकाश डालिए.

प्रश्न संख्या-2 वह तोड़ती पत्थर ;

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-

वह तोड़ती पत्थर इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए.

प्रश्न संख्या-3 बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास की भाषा शैली लिखिए.

प्रश्न संख्या-4 निराला के काव्य में प्रकृति चित्रण के तत्वों का विवेचन कीजिए.

प्रश्न संख्या-5 निराला के काव्य में आक्रोश और पीड़ा के स्वरों का विवेचन कीजिए.

प्रश्न संख्या-6 भारति,जय विजय करें ,कविता का निहित संदेश स्पष्ट करें.

प्रश्न संख्या-7'जागो फिर एक बार' कविता में गीता की किस उक्ति का वर्णन किया गया है ?

प्रश्न संख्या-8 'जूही की कली' कविता का नायक पवन किन-किन बाधाओं को जुझते हुए नायिका तक पहुँचता है ?

प्रश्न संख्या-9 'गहन है यह अंधकारा' कविता में कवि का हृदय किस खोज में भटक रहा है ?

प्रश्न संख्या-10 शिशु के छीन जाने पर सिंही और मेष माता के व्यवहार में क्या अन्तर होता है ?

सेक्शन-बी (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश: किन्ही चार प्रश्नो के विस्तृत उत्तर दीजिये . प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

(4 X 10 = 40 अंक)

प्रश्न संख्या-11 बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास के नायक का चरित्र -चित्रण लिखिए.

प्रश्न संख्या-12 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की काव्यगत विशेषताएँ बताइए.

प्रश्न संख्या-13 बिल्लेसुर बकरिहा उपन्यास का मूल सारांश लिखें.

प्रश्न संख्या-14 'स्नेह -निर्झर बह गया है' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए.

प्रश्न संख्या-15 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना है. इस कथन को स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न संख्या-16 स्वर हिलोरें ले रहा आकाश में,
काँपती है वायु स्वर -उच्छ्वास में,

प्रश्न संख्या-17 चढ़ रही थी धूप ;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप ;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू ,
गर्द चीनगीं छा गयीं ,
प्राय: हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर

प्रश्न संख्या-18 घन,भरी -गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की,ऊँचा कर सिर ,

ताक रहे है,ऐ विप्लव के बादल !

--- पेपर कोड BHL-E-511 (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')